Course – BA Education Hons, part 1
paper 1 - 1 (Philosophical & Sociological Foundation of Education)
Topic – Pragmatism in Education
Prepared by – Dr. Sangeeta Kumari

इकाई 7 : शिक्षा में प्रयोगवाद
Unit 7 : PRAGMATISM IN EDUCATION

7.1 प्रयोजनवाद का अर्थ व परिभाषा (Meaning & Definition of Pragmatism)

'Pragmatism' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द 'Pragmatikos' से मानी जाती है। 'Pragmatikos' शब्द Pragma से बना है जिसका अर्थ है - 'व्यवहार' या 'क्रिया'। 'Pragmatism' की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'Pragmaticus' से भी मानी जाती है जिसका अर्थ है - व्यावहारिकता।

परिभाषा (Definition) :-

विलियम जेम्स के अनुसार,

"फलवाद मस्तिष्क का एक स्वभाव है, एक अभिवृत्ति है, यह विचार और सत्य की प्रकृति का सिद्धान्त है और अन्ततः यह वास्तविकता के बारे में खोज का एक सिद्धान्त है।"

रॉस (Ross) के अनुसार,

"प्रयोगवाद अनिवार्यतः एक मानवतावादी दर्शन है। जो मानता है कि 'मानव क्रियाशीलता के बीच में अपने मूल्यों का निर्माण करता है और वास्तविकता का निर्माण होता रहता है और भविष्य में उसकी पूर्ति की संभावना बनी रहती है।"

Scanned with CamScanner

प्रैट (Pratt) के अनुसार,
"प्रयोजनवाद हमें अर्थ का सिद्धान्त, सत्य का सिद्धान्त और ज्ञान का सिद्धान्त और वास्तविकता का सिद्धान्त प्रदान करता है।"

7.2 प्रयोजनवाद की विशेषताएँ (Characteristics of Pragmatism)

प्रयोगवादी दर्शन एक मध्यममार्गीय विचारधारा है जो आदर्शवाद एवं प्रकृतिवाद मध्य का मार्ग अपनाती है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:—

(1) आध्यात्मिक शक्तियों में विश्वास नहीं :—
प्रयोगवाद इन्द्रिय अनुभवों से परे किसी चीज में विश्वास नहीं करता है।

(2) संसार भौतिक तत्वों से निर्मित है —
प्रयोगवाद मूलतः भौतिकवादी विचारधारा है। ये संसार का निर्माण बहुत तत्वों द्वारा मानते हैं। जहाँ ~~संसारवादी~~ आदर्शवादी संसार का निर्माण मन और आत्मा से, प्रकृतिवादी पदार्थ से मानता है वहीं ~~प्रयोगवादी~~ प्रयोगवादी इसका निर्माण अनेक तत्वों से माना है।

(3) आत्मा और मन क्रिया रूप में :—
प्रयोगवाद आत्मा को एक ऐसा तथ्य माना है जो क्रिया करता है। यह एक प्रकार का व्यवहार है जो सामाजिक स्थितियों के परिणामस्वरूप प्रकट होता है।

(4) समाज का वातावरण व्यक्ति के विकास में सहायक :—
प्रयोगवाद ने समाज से अलग किसी व्यक्ति का विकास सम्भव नहीं माना है। व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है, जिसकी आवश्यकताएं समाज में पूरी होती है।

(5) नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का महत्व उपयोगिता के कारण —
नैतिक मूल्य स्वयं में निरपेक्ष है यदि इनका कोई मूल्य है तो वह क्रियाओं द्वारा आँका जा सकता है

Scanned with CamScanner

भौतिक मूल्यों का मानदण्ड समाज है। जो क्रियाएँ समाज के लिए उपयोगी हों, वही सत्य है।

(6) कोई शाश्वत एवं अन्तिम विचार नहीं :-

मनुष्य अनुभवों द्वारा समाज में मूल्यों का निर्माण करता है, मूल्य सदा निर्माणाधीन होते हैं। जैसे-जैसे अनुभवों में परिवर्तन होता है वैसे-वैसे मूल्यों में बदलाव आता है।

(7) विज्ञान में विश्वास :-

विज्ञान व्यक्ति और समाज के लिए उपयोगी है। विज्ञान, प्रयोगों एवं अनुभवों द्वारा प्रमाणित सिद्ध करता है तथा अन्ध विश्वास को दूर करता है।

7.3. प्रयोजनवाद व शिक्षा (Pragmatism and Education) :-

प्रयोजनवाद ने शिक्षा की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ बताई है जो निम्नलिखित है :-

1. शिक्षा : सामाजिक कार्य :- Education : As a social Function)

प्रयोजनवादियों का कहना है कि शिक्षा की प्रमुख विशेषता उसका सामाजिक कार्य है। वे कहते हैं कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है। इसलिए, इसका विकास सामाजिक सन्दर्भ में होना चाहिए।

2. बालक का वास्तविक जीवन-अनुभव (Child's Real life experience)

शिक्षा को बालक का वास्तविक जीवन-अनुभव प्रदान करना चाहिए। प्रयोजनवाद के अनुसार सच्चा ज्ञान वही है, जो कुछ करके प्राप्त किया जाता है। प्रयोजनवादियों का मत है कि बालक को अपनी स्वयं की क्रियाओं और अनुभवों से ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

3. बालक का महत्व (Importance of child) :-

प्रयोजनवादी शिक्षा में बालक को बहुत महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। उनके अनुसार शिक्षा बालक के लिए है, न कि बालक शिक्षा के लिए।

Scanned with CamScanner

4) शिक्षा की लोकतन्त्रीय प्रक्रिया (Democratic Process of Education):-

प्रयोजनवादियों के अनुसार शिक्षा की प्रक्रिया लोकतन्त्रीय है। शिक्षा और लोकतन्त्र में बहुत सी बातें एक-सी है, क्योंकि दोनों व्यक्ति और उसके गुणों पर बल देते हैं।

7.4 प्रयोजनवाद व शिक्षा के उद्देश्य (Pragmatism & aim of Education)

प्रयोजनवाद के अनुसार शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है:—

(1) बालक: अपने मूल्यों व आदर्शों का निर्माता :-

प्रयोजनवादी कहते हैं कि बालक को स्वयं अपने मूल्यों और आदर्शों का निर्माता होना चाहिए। प्रयोजनवादी उन परिस्थितियों का निर्माण करते है जो बालक को अपने मूल्यों और आदर्शों का निर्माण करने में सहायता देती है।

(2) गतिशील व लचीले मस्तिष्क का विकास :-

प्रयोजनवादी बालक की आवश्यकताओं, इच्छाओं, अभिप्रायों और रुचियों को महत्व देते है। अतः उनको ठीक मार्ग पर ले जाना शिक्षा का कार्य है।

(3) छात्र का विकास:-

प्रयोजनवादी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य है - छात्रों का विकास।

(4) गतिशील निर्देशन:-

प्रयोजनवादी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य - छात्रों का गतिशील निर्देशन करना है। पर इतना कह देना ही काफी नहीं है। गतिशील निर्देशन की व्यवस्था की जानी आवश्यक है।

(5) सामाजिक कुशलता :-

प्रयोजनवादी शिक्षा के सामाजिक कार्यों पर बल देते है। शिक्षा का उद्देश्य है - प्रत्येक व्यक्ति की शक्तियों और क्षमताओं को इस प्रकार विकसित करना है कि वह सामाजिक रूप से कुशल व्यक्ति हो जाए।

Scanned with CamScanner

7.5 प्रयोजनवाद व पाठ्यक्रम :- (Pragmatism & Curriculum)

(1) उपयोगिता का सिद्धान्त :- (Principle of utility) :-

प्रयोजनवादी मनुष्यों के उद्देश्यों व इच्छाओं की पूर्ति पर बल देते हैं। इसलिए उनका कहना है कि पाठ्यक्रम में ऐसे विषय होने चाहिए, जो बालक को उसके वर्तमान और भावी जीवन के लिए तैयार करें। अत: उनके अनुसार पाठ्यक्रम में भाषा, स्वास्थ्य विज्ञान, भूगोल, गणित, विज्ञान और शारीरिक प्रशिक्षण को स्थान दिया जाना चाहिए। प्रयोजनवादी इस बात को भी मानता है कि अध्ययन के विषय इस दृष्टिकोण से चुने जाएँ कि वे जीवन की वास्तविक समस्याओं को हल करने में सहायता दें।

(2). बालक की रुचि का सिद्धान्त (Principle of child's Interest)

प्रयोजनवादियों के अनुसार बालक की रुचियाँ उसके विकास के विभिन्न स्तरों पर विभिन्न होती हैं। अत: पाठ्यक्रम की रचना करते समय इस बात का ध्यान रखा जाए।

(3) बालक के अनुभव का सिद्धान्त (Principle of child's experience)

प्रयोजनवादियों का कहना है कि पाठ्यक्रम का बालक के अनुभवों, भावी व्यवसायों और क्रियाओं के प्रति घनिष्ठ सम्बन्ध होना चाहिए। इसका कारण यह है कि जैसे ही सम्बन्ध स्थापित हो जाता है बालक अपनी इच्छाओं के द्वारा सीखने के लिए प्रेरित होता है।

(4) एकीकरण का सिद्धान्त (Principle of Integration) :-

प्रयोजनवादी बुद्धि की एकता और ज्ञान की एकता में विश्वास करते हैं। अत: उनका कहना है कि वास्तविक ज्ञान अखण्ड होना चाहिए। यही कारण है कि वे पाठ्यक्रम को विभिन्न विषयों के बाँटने के पक्ष में नहीं हैं।

7.6 प्रयोजनवाद व शिक्षण विधि (Pragmatism & Methods of Teaching)

प्रयोजनवादी निम्नलिखित शिक्षण विधियों को अपनाने पर बल देते हैं :-

(1) क्रिया या अनुभव द्वारा सीखना (Learning by doing or experience)

डीवी के अनुसार, "एक बालक पुस्तक पढ़कर या व्याख्यान सुनकर नहीं सीखता है --- वरन् कार्यों को करके सीखता है।

(2) योजना पद्धति (Project Method) :-

योजना विधि के प्रवर्तक किलपैट्रिक महोदय कहे जाते हैं। इस विधि में इस बात पर जोर दिया जाता है कि किसी निश्चित व्यवहारिक समस्याओं को सीखने की प्रक्रिया के आधार के रूप में हल किया जाना चाहिए। स्टीवेन्सन ने प्रोजेक्ट की परिभाषा देते हुए कहा है "समस्यात्मक कार्य जो अपनी स्वाभाविक स्थिति में पूर्ण किया जाए" प्रोजेक्ट कहलाता है। इस पद्धति के निम्नलिखित पद हैं :-

(1) परिस्थिति उत्पन्न करना या समस्या उत्पन्न करना
(2) समस्याओं का चुनाव करना
(3) योजना निर्माण
(4) वास्तविक क्रिया करना
(5) कार्य तब तक करना जब तक कि वह पूरा न हो जाए।
(6) मूल्यांकन करना
(7) सम्पूर्ण कार्य का अभिलेख तैयार करना

(3) सहसम्बन्ध द्वारा सीखना (Learning by Co-ordination Method)

प्रयोगवादी ज्ञान के विभाजन को उचित नहीं मानते हैं। उनका कहना है कि ज्ञान कई प्रकार का हो सकता है लेकिन सम्पूर्ण ज्ञान एक है। अतः शिक्षण देते समय इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि समस्त ज्ञान और शिक्षा को एक दूसरे से सह-सम्बन्धित करके दिया जाए, जिससे सभी प्रकार के ज्ञान में एकता स्थापित हो सके। बालक को इस बात की स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वह जिस क्रिया में लगा हुआ है उससे सम्बन्धित सारे ज्ञान को प्राप्त करे।

Scanned with CamScanner

7.7 प्रयोजनवाद एवं शिक्षक (Pragmatism and Teacher)

प्रयोगवादी विचारधारा के अनुसार शिक्षक को पथप्रदर्शक एवं सलाहकार के रूप में होना चाहिए। जो बालकों की बाधाओं को दूर कर उनका मार्ग प्रशस्त कर सके। वे शिक्षक से आशा करते हैं कि वे बच्चों को सहानुभूति एवं प्रेम देकर उनमें रुचियों का विकास करें।

7.8 प्रयोजनवाद व अनुशासन (Pragmatism & Discipline):-

प्रयोजनवादी बाह्य अनुशासन, शिक्षक के श्रेष्ठ अधिकार और शारीरिक दण्ड की निन्दा करते हैं, दूसरे शब्दों में व्यक्तिगत अनुशासन के सभी रूपों को बुरा बताते हैं। उनका कहना है कि अनुशासन "सामाजिक समझदारी" पर आधारित होना चाहिए। प्रयोजनवादी अनुशासन की स्थापना के लिए बालक की रुचियों और क्रियाओं पर बल देते हैं।

7.9 प्रयोजनवाद व विद्यालय (Pragmatism & School):-

प्रयोजनवादी शिक्षा को 'सामाजिक प्रक्रिया' मानते हैं। उनका मत है कि शिक्षा ही समाज को नया रूप देती है। अतः वे शिक्षा-संस्था को सामाजिक संस्था मानते हैं। उनका कहना है कि विद्यालय समाज का छोटा रूप है। पर यह रूप सरल, शुद्ध और विभिन्न तत्वों के बीच सन्तुलन स्थापित करनेवाला होना चाहिए।

7.10 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

Q1. Define pragmatism. Describe the discipline, teacher and teaching methods according to Pragmatism.

प्रयोजनवाद को परिभाषित कीजिए। प्रयोजनवाद के अनुसार अनुशासन, शिक्षक तथा शिक्षण विधियों का वर्णन कीजिए।

Scanned with CamScanner